© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज एवं संस्कृति का स्वरूपः एक विवेचना

सुरेश कुमारी, शोध छात्रा
हिन्दी विभाग जम्मू विश्वविद्यालय

सार

गोविन्द मिश्र हिंदी के श्रेष्ठतम कथाकारों में से एक हैं। उन्होंने अब तक बारह उपन्यास, बारह कहानी संग्रह एवं यात्रावृत्तांत, निबंधएवं कविताओं का लेखन कार्यकिया है। उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यासों मेंवह अपना चेहरा, धूल पौधों पर, लाल पीली जमीन, पांच आंगनोंवाला घर, तुम्हारी रोशनी में, फूल इमारतें और बंदर, धीर समीर, कोहरे में कैद रंग आदि हैं। गोविन्द मिश्र को साहित्य अकादमी, व्यास सम्मान, एवं सरस्वती सम्मान से सम्मानित कियागया है। भोपाल मेंरहकर वे अनवरत हिंदी साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। समाज बहुत कुछ धर्माधारित हुआ करता है। अनेक प्रकार की जातियों एवं समाजों के आपसी मेल-मिलाप के प्रभाव से एक नए तरह का समाज और नई तरह की संस्कृति विकसित होती है। व्यक्ति का सम्बन्ध अपने समाज से होता है। जिस समूह में व्यक्ति पला-बढ़ा होता है उस समाज और संस्कृति से उसका जुड़ाव हुआ करता है। अपने समूह से बाहर निकलकर जब व्यक्ति अन्य समाजों से अपना परिचय बढ़ाता है या अन्य समाज से उसका साक्षात्कार होता है, तो वह अपने और दूसरे की संस्कृति और समाज की तुलना करता है। अपने समाज की खामियों को दूर करते हुए उससे अच्छाई ग्रहण करता है।

मुख्य शब्दः धर्माधारित, साक्षात्कार, संस्कृति और समाज, आदि।

प्रस्तावनाः

भारतीय समाज और यहाँ पर गठित विभिन्न समाजों के बारे में 'भारतीय समाजः संरचना और परिवर्तन' नामक ग्रन्थ में ए. एल. दोषी, पी. सी. जैन ने समाज को परिभाषित करते हुए लिखा है - "समाज और कुछ न होकर अन्तःक्रियाओं की एक व्यवस्था है। भारतीय समाज की अपनी एक विशिष्टता रही है अपनी इस विशिष्ट व्यवस्था की अन्तः क्रिया बाहरी परम्पराओं की व्यवस्थाओं के साथ हुई है, यह भारत आतंरिक और बाहरी व्यवस्थाओं की अन्तःक्रिया का परिणाम है।"

पारिवारिक व्यवस्था–

परिवार, समाज की लघु इकाई है। परिवार व्यवस्था का निर्माण सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु किया गया है। जेपी सिंह अपनी पुस्तक 'समाजशास्त्र: अवधारणाएँ एवं सिद्धांत' में लिखते हैं – "यौन व्यवहार को नियंत्रित करने और बच्चों को सुरक्षा तथा सामाजिक शिक्षा प्रदान करने की मानवीय आवश्यकताओं के लिए परिवार का सृजन हुआ। परिवार सभी सामाजिक समूहों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और व्यापक समूह है। भारत में परिवार जैसे समूह के अभाव में समाज की कल्पना नहीं की जा सकती।"

परंपरागत जीवन पद्धति में विश्वास करने वाले लेखक गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में परिवार व्यवस्था का सूक्ष्म अंकन किया गया है। गोविन्द मिश्र के लगभग सारे उपन्यासों में परिवारों में आये टूटन एवं मूल्य संक्रमण को चित्रित किया गया है। बेहद पिछड़े माने जाते हुए गावों में परिवार का व्यक्ति के जीवन में अहम् योगदान होता है। 'कोहरे में कैद रंग' उपन्यास में नैरेटर का पालन–पोषण परिवार में होता है, परिवार उसे जीवन के संघर्षों से लड़ना सिखाता है। 'मैं' के पिता के पिता का बड़ा सा परिवार है। गरीबी और अशिक्षा में भी प्रेम की डोर बंधी होती है, पिता के प्रति उनके परिवार का लगाव शुद्ध पारिवारिक लगाव है, जहाँ पुत्र के लिए पिता के मन में अगाध प्रेम है। उसकी हर छोटी से बड़ी समस्याओं के लिए सारा परिवार संबल बन कर खड़ा मिलता है। 'पांच आंगनों वाला घर' संयुक्त परिवार का बहुत बड़ा उदाहरण है। इसी तरह 'लाल पीली जमीन' उपन्यास में पारिवारिक व्यवस्था का चित्रण किया गया है।

संस्कृति का स्वरूप–

संस्कृति का अर्थ व्यापक तौर यह यह लगाया जा सकता है कि व्यक्ति एवं समूह की गतिविधियों को धर्म एवं नैतिकता सम्मत कार्य सम्पादन का हेतु है। गोविन्द मिश्र 'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास में लिखते हैं – "साइंस का उलटा जो कुछ है, वह कल्चर है।" संस्कृति का पूरा आशय मनुष्य की संवेदनात्मक लगाव से होता है, संस्कृतियाँ समाजों के भीतर पाए जाने वाले उस बिंदु को स्पर्श करने का कार्य करती हैं, जिससे सामाजिक जुड़ाव बना रहे।

प्रेमचंद के शब्दों में – "मानव संस्कृति का विकास ही इसीलिये हुआ है कि मनुष्य अपने को समझे।" सच्चिदानंद सिन्हा के शब्दों में कहा जाय तो "संस्कृतियों की संरचना का तानाबाना भी मनुष्यों के पारस्परिक सम्प्रेषण पर पूरी तरह निर्भर है, और अगर संप्रेषण बाधित हो जाय तो इसका अस्तित्त्व भी खतरे में पड़ जाएगा।"

भारतीय संस्कृति अब धर्म की आगोश में आकर विचित्र प्रकार की हरकत कर रही है। धर्म के तांडव के सम्मुख संस्कृति दब सी गयी है आज के दौर में खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, मिलना-जुलना, बात-व्यवहार, भाषा, बोलचाल सब आयातित होता जा रहा है, इनका आना स्वागत योग्य है किन्तु इनकी अधिकता से भारतीय संस्कृति के अस्तित्त्व पर संकट जैसा है। वह संस्कृति जहाँ पर गाँवों में फ़ैली दूर-दूर तक सरसों के खेतों की वसंती बयार, त्योहारों में सभी गिले-शिकवे भूल जाने की चाहत, हिलमिल कर हिन्दुस्तान को नयी राह पर ले जाने की मंशा आज गायब होती जा रही है।

धर्म-

धर्म को परिभाषित करते हुए अरुण माहेश्वरी ने मार्क्स को याद किया है, उन्होंने लिखा है "धर्म उत्पीड़ित प्राणी की आह, ह्रदय विहीन विश्व का ह्रदय, आत्मविहीन परिवेश की आत्मा है। यह जनता की अफीम है।"

'धीरसमीरे' उपन्यास में सुनंदा के माध्यम से गोविन्द मिश्र ने ईश्वर की सत्ता को नकार दिया है-"गलत हैं वे लोग जो कहते हैं कि ईश्वर होता है।। होता तो संसार सञ्चालन में न्याय साफ़-साफ़ दिखाई देता। और वे तो निरे अन्धविश्वासी हैं जो कहते हैं कि ईश्वर का रूप करुणामय है।" उन्होंने 'धीरसमीरे' उपन्यास में इसी अफीम को केंद्र में रखा है। पैंतालिस दिनी ब्रजयात्रा में भारतीय परंपरा की खोज की ओर लेखक बढ़ता है। उसे वहाँ आज का बाज़ार, पाश्चात्य संस्कृति की विकृतता के साथ भारतीय संस्कृति और धर्म के ठेकेदारों का भी परिचय मिलता है।

अंधविश्वास-

विश्वास में अतिशय श्रद्धा ही अंधविश्वास का रूप ले लेती है। जहाँ पर तर्क-वितर्क की गुंजाईस न रह जाय अथवा किसी के प्रति इतनी ज्यादा सामाजिक आस्था आ टिके कि उस पर किसी प्रकार की टीका या टिप्पणी न की जा सके वहाँ अंधविश्वास का जन्म होता है। अंधविश्वास का बड़ा क्षेत्र धर्म का होता है, इस क्षेत्र में व्याप्त अंधविश्वास या अंधश्रद्धा का कोई ओर-छोर नहीं मिल सकता। 'धूल पौधों पर' कृति में युवागुरु का वर्णन भी रहस्य से परिपूर्ण है -"पूजापाठ रोज करने, उसमें रोज सम्मिलित होने से श्रद्धा बनती है। जैसा श्रद्धाभाव चाहती है आ जायेगा। पूजापाठ चलते रहना चाहिए" इसी तरह देवता से लेकर दानवों तक में घोर अंधश्रद्धा देखी जा सकती है। भारतीय जनमानस बहुत पहले से शास्त्रों से बंधा रहा था जिसमे ऐसी अंधश्रद्धा का विवरण

भरा मिलता है। राजाओं को ईश्वर की उपाधि देना, वृक्ष में, पत्थर में देवता ढूँढ लेना, नदियों में, पहाड़ों में, पशुओं में, पक्षियों में, यहाँ तक कि मरे हुए इंसान की कब्र में भी श्रद्धा खोज ली जाती है, कालान्तर में वही अंधश्रद्धा का रूप ग्रहण कर लेती है।

पर्व एवं त्यौहार–

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में मेले एवं त्योहारों का उल्लेख कई जगह हुआ है। 'पाँच आंगनों वाला घर' में मेले, त्योहारों आदि का बखूबी चित्रण मिलता है। जोगेश्वरी का घराना साहित्य, संगीत, कला का कद्रदान है। वकीली के पेशे के साथ जोगेश्वरी के पुत्र मुंशी राधेलाल इन शौकों को भी पालते हैं, उनके यहाँ बनारस की कोठे और मुजरेवालियों का भी कद्र किया जाता है। इस रचना में सन्नी के माध्यम से प्रयाग कुम्भ मेले का वर्णन भी किया गया है। दुनिया का सबसे बड़ा मेला प्रयाग में लगता है, हर बारवें वर्ष में महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। सन्नी घर से जब भागे तब उन्होंने साधुओं की मंडली का पीछा किया और प्रयाग के कुम्भ में जा पहुँचे।

खान–पान एवं वेशभूषा–

उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज और उसकी बनावट के बारे में यथार्थवादी नजरिये का प्रयोग करते हुए गोविन्द मिश्र ने गरीबी, भुखमरी, अमीरी का वर्णन किया है। 'कोहरे में कैद रंग' जैसे उपन्यास में 'मैं' के परिवार की आर्थिक तंगी एवं जीवन में आने वाले बदलाव का वर्णन करते हैं। मुल्लूमामा एवं अजब, भैयाबाई एवं टाईप बाबू दोनों को आमने–सामने रखकर गरीबी–अमीरी, भुखमरी और मस्ती का उल्लेख किया गया है। 'मैं' के पिता के सम्मुख जीविका चलाने के लिए कोई साधन न होने के कारण प्राइमरी अध्यापकी से लेकर मंगौड़े लगाने तक का संघर्ष करते दिखाया गया है। पिता जी को काम से किसी प्रकार की शर्म नही आती थी। साथ ही 'मैं' के नाना की पल्लेदारी करके जीविका चलाने का वर्णन किया गया है। इस बहाने लेखक ने ठेठ बुंदेलखंड की गरीबी का खाका खींच दिया है "भूख वह बुनियादी चिंता जो दादा से चलकर पिता तक आयी थी, दोनों ने जीवन में भूख देखी थी इसलिये। चाहे गाँव का वह रसखीरवाला दिन हो या बोर्डिंग हाउस में भेजने वाला दिन। भूख का इन्तिजाम करके ही पिता मेरे लिए अपना स्नेह दिखाते थे।" दादा गरीबी में ही जिए थे, अंतिम दिनों में वे मोतियाबिंद के शिकार हो जब चारपाई पर पड़े तो कोई उनकी चिंता करने वाला नहीं था – "कभी–कभी घर के लोग उन्हें खाना देना ही भूल जाते तो दादा कराहते हुए अपनी पूरी ताकत लगाकर

परछतिया से गुहार लगाते, 'भैया रोटी न मिल्हये का आज?' और तब घर के सामने से बाख खुचा जो कुछ होता, उसे एक थाली में डालकर कोई ले आता और दादा के पास पटककर चला जाता। दादा थथोल-थथोलकर खा लेते, अपनी कुटिया में पानी पी लेते और चारपाई पर पड़े रहते।"

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गोविन्द मिश्र के लेखन में समय के साथ समस्याओं को नए कलेवर में रखने का हुनर प्राप्त है। समाज और संस्कृति उनके उपन्यासों में प्रमुख स्थान पाते हैं, आशावादी गोविन्द मिश्र अपने समाज और उसमें घटित होने वाली हर परिस्थिति का सूक्ष्म अंकन करने की क्षमता रखते हैं, उनके कई सारे उपन्यासों में स्त्री जीवन, गरीबी-भुखमरी, ऊँच-नीच का भेदभाव के साथ परम्परा के प्रति लगाव, संस्कृति और धर्म के प्रति यथार्थवादी मानवीय सोच आदि का समिश्रण विद्यमान है। उपन्यास जैसा कि अपने समय की आलोचना होता है, उसी तरह की ईमानदारी गोविन्द मिश्र ने लेखन में दिखाई है। धर्म पर उनकी यथार्थवादी सोच जिसे वैज्ञानिक सोच भी कह सकते हैं, स्त्रियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, मंडल कमीशन जैसी राजनीति प्रेरित व्यवस्था का समर्थन, शिक्षा व्यवस्था की कड़ी आलोचना, सामंती परिवेश और सोच का विरोध एवं समकालीन समय में पल रहे राजनीतिक संकट एवं युवाओं के बहके हुए चरित्र का भी खुलासा किया गया है। गोविन्द मिश्र ने जिस भी कृति को रचा है उसमें वे पूरे ईमानदारी के साथ पेश आये हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

[1] भारतीय समाज: संरचना एवं परिवर्तन, एस. एल. दोषी, पी. सी. जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 2007, पृष्ठ संख्या-5

[2] पाँच आँगनों वाला घर: गोविन्द मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन- नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2008 पृष्ठ संख्या 7

[3] कोहरे में कैद रंग: गोविन्द मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004, पृष्ठ संख्या 28

[4] आदमी की निगाह में औरत:राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 22

[5] भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र: ए. आर. देसाई, अनुवादक- हरिकृष्ण रावत, रावत पब्लिकेशंस- हैदराबाद, पुनर्मुद्रित संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या-37

[6] तुम्हारी रोशनी में: गोविन्द मिश्र, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली, पहला संस्करण-1985, पृष्ठ संख्या-71

[7] संस्कृति और समाजवाद: सच्चिदानंद सिन्हा, वाणी प्रा। नई दिल्ली, संस्करण, 2004, पृष्ठ संख्या- 5

[8] धर्म, संस्कृति और राजनीति: अरुण माहेश्वरी, अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर (प्रा) लिमिटेड,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015, पृष्ठ संख्या- 14

[9] धीरसमीरे: गोविन्द मिश्र, वाणी प्रकाशन- नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2012, पृष्ठ संख्या-10

[10] धूल पौधों पर: गोविन्द मिश्र, वाणी प्रकाशन- नई दिल्ली, आवृत्ति संस्करण-2014, पृष्ठ संख्या- 15

[11] हुजूर दरबार: गोविन्द मिश्र, किताबघर- नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2011, पृष्ठ संख्या-28